कोरसीना बांध ने बुझाई प्यास

भारत डोगरा

कोरसीना पंचायत व आसपास के कुछ गांव पेयजल के संकट से इतने त्रस्त हो गए थे कि कुछ वर्षों से ये गांव अस्तित्व के संकट से जूझ रहे थे। दरअसल राजस्थान के जयपुर ज़िले के दुधू ब्लाक में स्थित ये गांव सांभर झील के पास स्थित होने के कारण खारे पानी के असर से बहुत प्रभावित हो रहे थे। सांभर झील में नमक बनता है और इसका प्रतिकूल असर आसपास के गांवों में खारे पानी की बढ़ती समस्या के रूप में सामने आ रहा है।

गांववासियों व वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता लक्ष्मीनारायण ने खोजबीन कर पता लगाया कि पंचायत के पास के पहाड़ों के ऊपरी क्षेत्र में एक जगह बहुत पहले एक जल-संग्रहण प्रयास किया गया था। इस ऊंचे पहाड़ी स्थान पर जल-ग्रहण क्षेत्र काफी अच्छा है व कम स्थान में काफी पानी एकत्र हो जाता है। अधिक ऊंचाई के कारण यहां सांभर झील के नमक का असर भी नहीं पहुंचता है। इसी के मद्देनज़र इस ऊंचे स्थान पर पानी रोकने का प्रयास पहले किया गया होगा। पर अब यह टूट-फूट गया था व बांध स्थल में मिट्टी भर गई थी।

लक्ष्मीनारायण जी व गांववासियों ने काफी प्रयास किया कि यहां नए सिरे से पानी रोकने के लिए निर्माण कार्य किया जाए। काफी प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिली। इस बीच एक सड़क दुर्घटना में लक्ष्मीनारायण जी का देहान्त हो गया।

इस स्थिति में पड़ोस के गांवों में कई सार्थक कार्यों में लगी संस्था बेयरफुट कॉलेज ने इस अधूरे कार्य को पूरा करने का निर्णय लिया। यह सपना पूरा होता तब नज़र आया जब बेलू वाटर नामक संस्थान ने इस कोरसीना बांध परियोजना के लिए 18 लाख रुपए का अनुदान देना स्वीकार कर लिया।

इस छोटे बांध की योजना में न तो कोई विस्थापन है न पर्यावरण की क्षति। अधिकांश अनुदान राशि का उपयोग मज़दूरी देने के लिए ही किया गया। मज़दूरी समय पर

मिली व कानूनी दर पर मिली। इस तरह गांववासियों की आर्थिक ज़रूरतें भी पूरी हुईं तथा ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र में पानी रोकने का कार्य तेज़ी से आगे बढ़ने लगा।

जल ग्रहण क्षेत्र का उपचार कर इसकी हरियाली बढ़ाई गई। खुदाई से जो मिट्टी-बालू निकली उसका उपयोग मुख्य बांध स्थल से नीचे मेड़बंदी के लिए भी किया गया ताकि आगे भी कुछ पानी रुक सके।

कोरसीना बांध के पूरा होने के एक वर्ष बाद ही गांववासियों ने बताया कि इससे लगभग 50 कुंओं का जल स्तर ऊपर उठा। अनेक हैंडपंपों व तालाबों को भी लाभ मिला। कोरसीना के एक मुख्य कुएं से पाइपलाइन अन्य गांवों तक पंहुचती है जिससे पेयजल कई अन्य गांवों तक भी पहुंचता है।

यदि यह परियोजना अपनी पूरी क्षमता प्राप्त कर पाई तो इसका लाभ 20 गांवों, 13874 गांववासियों व 79850 पशुओं को भी मिल सकता है। इसके अतिरिक्त वन्य जीवों, पक्षियों की भी प्यास बुझेगी।

अनुभवी गांववासियों ने बताया कि कांकड़िया नामक एक और स्थान पर भी ऐसे ही पानी रोकने का प्रयास करने से जल-संग्रहण-संरक्षण में और अधिक सफलता मिलेगी। गांववासियों की भागीदारी से ऐसी छोटी परियोजनाएं बिना विस्थापन व पर्यावरण क्षति के बेहतर लाभ दे सकती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***